International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नेपाली के गीतों में उनकी प्रगतिशील–चेतना

डॉ0 आर्य सिन्धु
नेट, पी–एच0डी0 (हिन्दी)

कविवर गोपाल सिंह नेपाली उत्तर–छायावाद के एक ऐसे लोकप्रिय गीतकार हुए हैं, जिन्होंने अपने गीतों के माध्यम से अपनी वाणी को जन–जन तक पहुँचाया है । उनकी रचना में जहाँ एक ओर प्रेम, प्रकृति और देशभक्ति की त्रिवेणी है तो वहीं दूसरी ओर उदात्त मानवीय समाज की कल्पना, दुखी, दरिद्र व शोषित जनता के प्रति आत्मीय लगाव व सामाजिक–चेतना भी है–

''जब–जब जतना पर दुख की बदली छाई है
तब–तब हमने विप्लव बिजली चमकाई है
मानवता का परिहास बदलने वाले हैं
हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले हैं।''[1]

युवा मन की मस्ती, प्रकृति–प्रेम, देश के प्रति सच्ची श्रद्धा व रागात्मकता का रंग लिए उनकी रचनाओं में एक सामाजिक यथार्थ का भी दर्शन देखने को मिलता है –

''समाज पर कभी रहे न व्यक्ति की प्रधानता
मनुष्य माँगता यही, यही मनुष्य मानता
कि हो समाज–राज में मनुष्य की समानता ।''[2]

अपने देश, समाज और जीवन के प्रति चिंतनशील नेपाली के गीत यथार्थ की जमीन पर खड़े नजर आते हैं, जिसमें एक प्रगतिशील–चेतना की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है । प्रसिद्ध विद्वान रघुनाथ उपाध्याय शलभ ने ठीक ही लिखा है – ''नेपाली के गीतों में सामाजिक विसंगति और विद्रूपता के विरोध के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना का उद्गार है । शोषण और कदाचार के प्रतिरोध के साथ सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता का आह्वान भी है । दलित विमर्श के साथ प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा और अखंड भारत के लिए त्याग और बलिदान का जज्बा भी है। समय, समाज और सत्ता से लड़ने की हिम्मत और हौसला भी है । वेबाक बोलने की ताकत के साथ आम आदमी की उम्मीदों की कसौटी पर खरा उतरने की जद्दोजहद भी है ।''[3] कवि नेपाली का आगमन उस युग में हुआ था, जब देश में अंग्रेजों की सत्ता व उसके दमनचक्र की बर्बरता व्याप्त थी । जहाँ एक ओर स्वाधीनता आन्दोलन तीव्रतर हो रहा था वहीं दूसरी ओर विदेश सत्ता के दलाल–चाटुकार,

जमींदारों व रायबाहदुरों के दुष्प्रचार की मुहिम भी तेज थी । ऐसे समय में कविवर नेपाली ने अपनी भूमिका इन पंक्तियों से तय कर दी –

''हुआ देश खातिर जनम है हमारा
कि कवि हूँ तड़पना करम है हमारा
कि कमजोर पाकर मिटा दे न कोई
इसी से जगाना धरम है हमारा ।''[4]

इस देश में जो भी क्रांतिकारी कवि हुए, उन्होंने आजादी का मतलब तीन स्तरों पर देखा – पहला राजनीतिक, दूसरा आर्थिक तथा तीसरा सामाजिक । यह हमारे देश का दुर्भाग्य रहा है कि हमें राजनीतिक आजादी, तो मिली पर आर्थिक और सामाजिक आजादी के लिए हमें संघर्ष करना पड़ा । नेपाली की कई कविताओं में यह दर्द दिखाई देता है –

''दिन गए बरस गए यातना गयी नहीं
रोटियाँ गरीब की प्रार्थना बनी रहीं ।''[5]

नेपाली ने अपने गीतों में शोषित, पीड़ित और दलित जनता के प्रति गहरी संवेदनाएँ व्यक्त की हैं । उनकी नजरों में देश में आज भी गरीबी व्याप्त हैं । विकास की नदियों में आज भी सूखापन है –

''घनश्याम कहाँ जाकर बरसे, हर घाट गगरिया प्यासी है
उस ओर ग्राम इस ओर नगर चहुँ ओर नजरिया प्यासी है
धरती प्यासी, परती प्यासी, प्यासी है आस लगी खेती
बागों की चर्चा कौन करे, जब यहाँ डगरिया प्यासी है ।''[6]

कवि नेपाली एक सामाजिक–मानवता के निर्माण के कवि हैं इसलिए उनके गीतों में ग्राम–नगर और संपूर्ण भारत का चित्र उपस्थित है –

''पौ फटते ही चमक उठे जब, गाँव खेत खलिहान
कंधे पर हल डाल कुटी से, चला गरीब किसान
उसके स्वेद रूधिर ने सींची जल बन क्यारी–क्यारी
जैसे उसकी मुट्ठी से ही निकली फसलें सारी ।''[7]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नेपाली की काव्य भाषा भी इतनी सहज व सरल है कि जिससे वो सीधे–सीधे दीन–हीनों, दलितों और उपेक्षित स्त्रियों की बात करते हैं । उनकी नजरों में गरीबों को न ही उचित शिक्षा मिल पा रही है और न ही भरपेट भोजन –

''उथला–उथला हो गया है, गाँव का कुँआ
सारा पानी पी गया है, आग का धुँआ
ठोकरों के सामने लुढ़क रहे हैं डोल
कोयला और राख में जिंदगी का मोल ।''[8]

वे समाज और सत्ता के सामने उपस्थित होकर जीवंत सवाल पूछते हैं –

''चर्चा तो सदियों से है, पर हर कुटी अटारी कब होगी
जो क्रांति पली झोपड़ियों में वह राज दुलारी कब होगी
घर–घर का तिमिर बुझाने को जो दीप बुझे वे पूछ रहे
अब मुझको–जलना नहीं पड़े, ऐसी उजियारी कब होगी ।''[9]

शोषित–पीड़ित समाज को देखकर नेपाली आहत और उदास होते हैं । उसके अंत के लिए सर्जनात्मक स्तर पर लड़ाई लड़ते हैं । अमीर गरीब की खाई को पाटकर एक सुखी समाज की संरचना पर बल देते हैं । जब तक समाज में भेदभाव दूर नहीं होगा तब तक कल्याणकारी समाज की कल्पना नहीं हो सकती । इसलिए कवि को लगता है कि अब अश्रु बहाने से काम नहीं चल सकता –

''जंजीर टूटती न कभी अश्रुधार से
दुख दर्द दूर भागते नहीं दुलार से
हटती न दासता, पुकार से, गुहार से ।''[10]

नये समाज के निर्माण के लिए आज एक नवीन कल्पना की आवश्यकता है । इसलिए कवि संपूर्ण समाज को उद्बोधित करता है –

''अब घिस गई समाज की तमाम नीतियाँ
अब घिस गई मनुष्य की अतीत रीतियाँ
है दे रही चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ
निज राष्ट्र के षरीर में सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो । ''[11]

ईश्वर ने मनुष्य को इतनी शक्ति दी है कि वह सबकुछ कर सकता है, लेकिन उसके लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य है गुलामी की जंजीरें । इसलिए नेपाली सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति की बात करता है, चाहे वह गुलामी मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक हो या सामाजिक–

''दुनिया में न गुलामी होगी मानव की मानव पर कायम
बढ़ो तुम्हारे संघर्षों से एक नया संसार बनेगा
बढ़ों लगा दें आग चिता पर आज गुलामी को जलना है
बढ़ो गीत विप्लव का गाते थोड़ी दूर और चलना है ।''[12]

नेपाली का संपूर्ण जीवन कष्ट व अभावों में बीता, लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी दरिद्रता के सामने रोना नहीं रोया । इसलिए उन्हें लगता है कि जब देश का युवा जागेंगे तो एक नया संसार बनाकर प्रगतिशील चेतना का परिचय देंगे –

''युवक बसायेंगे हिल मिलकर एक नया संसार
तरूण बनायेंगे रच–रचकर एक नया संसार
एक नया श्रृंगार सृष्टि का
एक नया संसार दृष्टि का
एक नया जीवन का घेरा
एक नया मानव का डेरा
एक नया वैभव का फेरा
नया उजाला नया अँधेरा
जगती की प्राचीन बीन में नये सजेंगे तार
नये बजेंगे तार ।''[13]

और यह नया संसार गरीबी व शोषण से मुक्त होगा तथा जिसमें एक नई सामाजिक चेतना और मानव कल्याण का पर्याय होगा –

''सामाजिक पापों के सिर पर चढ़कर बोलेगा अब खतरा
बोलेगा पतितों–दलितों के गरम लडू का कतरा–कतरा
होंगे भस्म अग्नि में जलकर धरम–करम औ पोथी–पत्रा
और पुतेगा व्यक्तिवाद के चिकने चेहरे पर अलकतरा
सड़ी गली प्रचीन रूढ़ि के भवन गिरेंगे, दुर्ग ढ़हेंगे

युग प्रवाह पर कटे वृक्ष से दुनिया भर के ढ़ोंग बहेंगे
पतित–दलित मस्तक ऊँचाकर संघर्षों की कथा कहेंगे
और मनुज के लिए मनुज के द्वार, खुले–के–खुले रहेंगे ।''[14]

इस प्रकार नेपाली गुलाम और आजाद भारत के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक घटना क्रम से उभरते परिदृश्य पर अपनी सजग एवं संवेदनशील नजर रखकर लोगों में एकता का भाव स्थापित कर एक नये समाज के नवनिर्माण में महती भूमिका स्थापित करते हैं –

''है देश एक, लक्ष्य एक, कर्म एक है
हम कोटि–कोटि हैं, मनुष्य, मर्म एक है
पूजा करो पढ़ो नमाज धर्म एक है
बदनाम हो अगर स्वराज, तो शर्म एक है
चाहो की एकता बनी रहे जनम–जनम
तुम भेद न करो, मनुष्य भेद न करो
तुम कल्पना करो, नवीन कलपना करो ।''[15]

प्रसिद्ध विद्वान दिवाकर पाण्डेय ने ठीक ही लिखा है – ''नेपाली काव्य में प्रकृति है, प्रेम है, नारी है, राष्ट्रीयता है, मानवता है, प्रगतिशील है, स्वच्छन्दता है, संघर्ष है, यथार्थ है, विद्रोह है और सबसे ऊपर है एक नवीन चेतना का आग्रह । एक नवीन लोक के सृजन का आग्रह ।''[16]

नेपाली ने अपने गीतों के माध्यम से एक समाजोन्मुख वस्तुपरकता को अंगीकार करते हुए प्रगतिशील चेतना के प्रसार में महती भूमिका निभाई । आज भी उनके गीत अपने लोक और समाज से सीधा संवाद करते हैं तथा उनमें नई उर्जा व स्फूर्ति प्रदान कर एक आदर्श समाज की कल्पना पर बल देते हैं । नेपाली ने सच ही लिखा है –

'' मैं गाता हूँ जीवन की सुन्दरता
यौवन का यश भी मैं गाया करता
मधु बरसाती मेरी वाणी–वीणा
बाँटा करती समता–ममता–करूणा।''[17]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ –

01. गोपाल सिंह नेपाली समग्र–1 / 528
02. वही / 530
03. आजकल / नवंबर – 2011 / 20
04. गोपाल सिंह नेपाली समग्र–1 / 457
05. अलाव, नेपाली जन्मशती विशेषांक, मार्च–अप्रैल–2012 / 355
06. गोपाल सिंह नेपाली समग्र–1 / 551
07. परिषद् पत्रिका / त्रैमासिक आलोचना / मार्च–2000 / 70 / 71
08. वही / 71
09. आजकल / नवबंबर–2011 / 24
10. गोपाल सिंह नेपाली समग्र–1 / 496
11. वही / 495
12. अलावः नेपाली जन्मशती विशेषांक / मार्च–अप्रैल–2012 / 389
13. गोपाल सिंह नेपाली समग्र–1 / 392
14. वही / 392
15. वही / 495
16. जनपथ / दिसम्बर–2011 / 39
17. नेपालीः चिंतन–अनुचिंतन / 60